The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 12 | December2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

# रूस-यूक्रेन संकट: भारतीय परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में

**कैलाश चन्द्र बुनकर**
अतिथि व्याख्याता, श्री हीरालाल देवपुरा राजकीय महाविद्यालय,
आमेट, राजसमंद (राजस्थान)

**ARTICLE DETAILS**

**Research Paper**

**Keywords:**
*संयुक्त राष्ट्र, भारत, रणनीतिक साझेदारी, वैश्विक राजनीति*

**ABSTRACT**

रूस-यूक्रेन संकट 21वीं सदी का एक प्रमुख भू-राजनीतिक घटनाक्रम है, जिसने न केवल यूरोप, बल्कि पूरे विश्व की स्थिरता और वैश्विक अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया है। यह संकट 2014 में क्रीमिया के रूसी अधिग्रहण के साथ शुरू हुआ और 2022 में बड़े पैमाने पर युद्ध में तब्दील हो गया है। यह संकट वैश्विक ऊर्जा और खाद्य सुरक्षा, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और प्रमुख महाशक्तियों के बीच तनाव को बढ़ावा देने वाला सिद्ध हुआ है। भारत के लिए यह संकट एक कूटनीतिक चुनौती प्रस्तुत करता है क्योंकि उसके रूस के साथ ऐतिहासिक संबंध हैं और पश्चिमी देशों के साथ बढ़ते रणनीतिक हित भी हैं जो भारत के लिए दोहरी चुनौती प्रस्तुत करते हैं। भारत के लिए यह संकट न केवल एक चुनौती है, बल्कि वैश्विक राजनीति में अपनी भूमिका को पुनः परिभाषित करने का अवसर भी प्रदान करता है। भारत ने इस संघर्ष में तटस्थता की नीति अपनाई है। साथ ही, वैश्विक मंच पर शांति और स्थिरता की वकालत करते हुए इस संकट के शांतिपूर्ण समाधान की बात की है। इस शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य रूस-यूक्रेन संकट का विश्लेषण करते हुए भारत की इस संकट के प्रति तटस्थता की नीति, कूटनीतिक संतुलन और वैश्विक संदर्भ में उसकी संभावित रणनीति पर प्रकाश डालना है। साथ ही, रूस-यूक्रेन संकट की जटिलताओं, इसके वैश्विक प्रभावों और इसके प्रति भारतीय दृष्टिकोण को स्पष्ट करना भी है। यह शोध पत्र इस संघर्ष से भारत पर पड़ने वाले प्रभावों, जैसे ऊर्जा सुरक्षा, रक्षा उपकरणों की आपूर्ति और कूटनीतिक चुनौतियों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अंत में, यह भारत की इस संकट के प्रति संभावित रणनीति का सुझाव देता है ताकि भारत वैश्विक मंच पर शांति और स्थिरता कायम रखने के लिए एक सक्रिय भूमिका निभा सके। प्रस्तुत शोध पत्र मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है जो विषय से संबंधित उपलब्ध स्रोतों से आंकड़ों का संग्रहण

करता है।

**प्रस्तावना:**

यूक्रेन और रूस सैकड़ों वर्षों के सांस्कृतिक, भाषाई और पारिवारिक संबंध साझा करते हैं। रूस और यूक्रेन में कई समूहों के लिये देशों की साझा विरासत एक भावनात्मक मुद्दा है जिसका चुनावी और सैन्य उद्देश्यों के लिये प्रयोग किया गया है। सोवियत संघ के हिस्से के रूप में, यूक्रेन रूस के बाद दूसरा सबसे शक्तिशाली सोवियत गणराज्य था और रणनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक रूप से काफी महत्त्वपूर्ण था।

रूस-यूक्रेन संकट 21वीं सदी का एक महत्वपूर्ण भू-राजनीतिक घटनाक्रम है, जिसने न केवल यूरोप बल्कि पूरे विश्व की राजनीति और अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया है। इस संघर्ष ने वैश्विक स्थिरता और ऊर्जा सुरक्षा को चुनौती दी है, और प्रमुख महाशक्तियों के बीच द्वंद्व को पुनर्जीवित किया है। भारत, जो रूस के साथ ऐतिहासिक संबंध रखता है और पश्चिम के साथ अपनी बढ़ती निकटता के चलते, इस संकट के बीच संतुलन साधने की कोशिश कर रहा है। इस शोध पत्र में रूस-यूक्रेन संकट की पृष्ठभूमि, इसके प्रमुख कारण, वैश्विक प्रभाव और भारतीय दृष्टिकोण की विस्तार से चर्चा की जाएगी।

**रूस-यूक्रेन संकट की पृष्ठभूमि:**

रूस और यूक्रेन के बीच का संबंध अत्यंत जटिल और ऐतिहासिक है, जो सोवियत संघ के विघटन के बाद से लगातार बिगड़ता गया है। 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद, यूक्रेन एक स्वतंत्र राष्ट्र बन गया। लेकिन यूक्रेन में रूस के प्रभाव को लेकर लगातार असंतोष बना रहा। रूस यूक्रेन को अपनी सुरक्षा का एक महत्वपूर्ण अंग मानता है, क्योंकि यह रणनीतिक रूप से रूस की पश्चिमी सीमा पर स्थित है।

2014 में, रूस ने क्रीमिया प्रायद्वीप पर कब्जा कर लिया, जिससे रूस-यूक्रेन के संबंधों में गंभीर तनाव उत्पन्न हुआ। इससे पहले भी रूस और यूक्रेन के बीच इस क्षेत्र को लेकर काफी तनाव बना हुआ था। ऐसा इसलिए क्योंकि सोवियत संघ ने इस क्रीमिया क्षेत्र को तोहफे के रूप में यूक्रेन को सौंपा था जिसके बाद वर्ष 2015 में फ्रांस और जर्मनी ने मध्यस्थता करते हुए रूस और यूक्रेन में शांति समझौता करवाया था। किन्तु अब फिर वह टकराव खुलकर सामने आ गया है।

यूक्रेन और रूस में समझौते के बाद यूक्रेन पश्चिमी देशों से अपने अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध मजबूत बनाने में जुट गया जिसे रूस ने अपने हितों के लिए अच्छा नहीं समझा। रूस नहीं चाहता था कि यूक्रेन के संबंध किसी भी पश्चिमी देश का अच्छे हों और यूक्रेन नाटो का सदस्य बने। रूस का कहना है कि यदि यूक्रेन को नाटो देशों की तरफ से किसी भी प्रकार की मदद मिलती है, तो उसका अंजाम सभी को भुगतना होगा। नाटो का सदस्य बनना यूक्रेन के लिए इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यदि कोई तीसरा देश सदस्य देश पर हमला करता है तो सभी नाटो देश एकजुट होकर उसका सामना करते हैं। क्रीमिया के अधिग्रहण

को पश्चिमी देशों ने अवैध माना और इसके बाद रूस पर कई आर्थिक प्रतिबंध लगाए गए। यह संघर्ष यूक्रेन के पूर्वी हिस्से डोनबास में और भी गंभीर हो गया, जहाँ रूस समर्थित विद्रोहियों और यूक्रेनी सेना के बीच संघर्ष शुरू हुआ।

यूक्रेन का पश्चिमी देशों के साथ बढ़ता संबंध और नाटो में शामिल होने की उसकी आकांक्षा रूस के लिए एक प्रमुख चिंता का विषय बन गई। रूस नाटो के विस्तार को अपनी सुरक्षा के लिए खतरा मानता है और यूक्रेन को नाटो में शामिल होने से रोकने के लिए इस संघर्ष को एक रणनीतिक लड़ाई के रूप में देखता है।

**रूस-यूक्रेन संकट के प्रमुख कारण:**

**भू-राजनीतिक कारण:**

रूस और यूक्रेन के बीच का संघर्ष मुख्य रूप से भू-राजनीतिक है। यूक्रेन के नाटो में शामिल होने की इच्छा ने रूस की सुरक्षा चिंताओं को बढ़ा दिया है। रूस नाटो के विस्तार को रोकने के लिए यूक्रेन पर नियंत्रण चाहता है, क्योंकि वह इसे अपने सुरक्षा दायरे में देखता है।

**आर्थिक और ऊर्जा संसाधन:**

रूस और यूक्रेन दोनों के लिए ऊर्जा संसाधन अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। यूक्रेन रूस के लिए एक महत्वपूर्ण ऊर्जा ट्रांजिट देश है, क्योंकि रूस की गैस पाइपलाइनें यूरोप तक पहुंचने के लिए यूक्रेन से होकर गुजरती हैं। यह संघर्ष इन पाइपलाइनों और ऊर्जा संसाधनों के नियंत्रण के लिए भी लड़ा जा रहा है।

**सांस्कृतिक और जातीय विवाद:**

यूक्रेन के पूर्वी क्षेत्रों में रूस समर्थित लोगों की बड़ी आबादी है, जो रूस के साथ सांस्कृतिक और भाषाई संबंध रखती है। इन क्षेत्रों में रूस समर्थित विद्रोहियों और यूक्रेनी सेना के बीच संघर्ष चल रहा है, जो इस विवाद को और भी जटिल बना देता है।

**वैश्विक प्रभाव:**

रूस-यूक्रेन संघर्ष का प्रभाव केवल दो देशों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह वैश्विक राजनीति और अर्थव्यवस्था को भी प्रभावित करता है। इस संघर्ष के कारण अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में तनाव बढ़ा है, विशेष रूप से पश्चिमी देशों और रूस के बीच।

**ऊर्जा संकट:**

यूरोप और अन्य देशों को रूस से मिलने वाली गैस और तेल की आपूर्ति इस संघर्ष से गंभीर रूप से प्रभावित हुई है। रूस पर लगाए गए आर्थिक प्रतिबंधों ने वैश्विक ऊर्जा बाजार को अस्थिर कर दिया है और तेल व गैस की कीमतों में भारी वृद्धि हुई है।

**खाद्य सुरक्षा:**

यूक्रेन और रूस दोनों ही वैश्विक खाद्य आपूर्ति के प्रमुख स्रोत हैं, विशेष रूप से गेहूं और अन्य अनाजों के लिए। इस संघर्ष के चलते वैश्विक खाद्य संकट की स्थिति उत्पन्न हुई है, जिससे विकासशील देशों पर गंभीर प्रभाव पड़ा है।

**आर्थिक प्रतिबंध:**

रूस पर लगाए गए आर्थिक प्रतिबंधों ने वैश्विक व्यापार और निवेश पर भी असर डाला है। यूरोपीय और अमेरिकी कंपनियों ने रूस के साथ व्यापारिक संबंधों को समाप्त कर दिया है, जिससे वैश्विक अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

**भारत का दृष्टिकोण:**

भारत के लिए रूस-यूक्रेन संकट अत्यंत जटिल स्थिति उत्पन्न करता है। भारत के रूस के साथ ऐतिहासिक संबंध हैं, जबकि वह पश्चिमी देशों के साथ अपनी आर्थिक और रणनीतिक साझेदारी को भी बढ़ा रहा है। ऐसे में भारत के सामने संतुलन बनाए रखने की चुनौती है।

भारत और रूस के बीच लंबे समय से घनिष्ठ संबंध रहे हैं, विशेष रूप से शीत युद्ध के समय से। रूस भारत का एक प्रमुख रक्षा सहयोगी रहा है और भारत की सैन्य उपकरणों की आपूर्ति का बड़ा हिस्सा रूस से आता है। इस कारण भारत रूस के खिलाफ सीधे कदम उठाने से बच रहा है।

हाल के वर्षों में, भारत ने अमेरिका और यूरोपीय देशों के साथ अपने संबंधों को मजबूत किया है। क्वाड (Quad) जैसे मंचों पर भारत की सक्रिय भूमिका इस बात का संकेत है कि भारत अब पश्चिमी देशों के साथ भी अपने रणनीतिक संबंध बढ़ा रहा है। ऐसे में, भारत को रूस और पश्चिम के बीच संतुलन साधना पड़ रहा है।

रूस-यूक्रेन संकट पर भारत ने तटस्थता की नीति अपना रखी है क्योंकि वह रूस के साथ भी अपने अच्छे संबंध बनाए रखना चाहता है। भारत ने संयुक्त राष्ट्र में रूस के खिलाफ लाए गए विभिन्न प्रस्तावों पर वोटिंग से दूरी बनाए रखी है। भारत ने इस संघर्ष में सीधे किसी का पक्ष नहीं लिया है, लेकिन इस संकट के समाधान के लिए शांति और कूटनीति का समर्थन किया है।

**भारत पर संकट का प्रभाव:**

भारत पर इस संकट का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है जो निम्न प्रकार है:-

**ऊर्जा संकट:**

भारत अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए तेल और गैस पर निर्भर है, और रूस-यूक्रेन संकट के चलते वैश्विक बाजार में तेल और गैस की कीमतें बढ़ी हैं। इससे भारत की ऊर्जा आपूर्ति प्रभावित हो रही है, और तेल की ऊंची कीमतों का भारतीय अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

**रक्षा उपकरणों की आपूर्ति:**

रूस से सैन्य उपकरणों की आपूर्ति में भी रुकावट की संभावना है, क्योंकि रूस पर लगाए गए प्रतिबंधों के कारण भारतीय रक्षा क्षेत्र पर भी असर हो सकता है। भारत अब अपने रक्षा उपकरणों के स्रोतों में विविधता लाने की कोशिश कर रहा है।

**कूटनीतिक चुनौती:**

भारत के लिए कूटनीतिक रूप से यह स्थिति चुनौतीपूर्ण है, क्योंकि उसे रूस और पश्चिम दोनों के साथ अपने संबंधों को बनाए रखना है। भारत को एक संतुलित विदेश नीति अपनानी होगी, जिसमें वह किसी भी पक्ष को नाराज किए बिना अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा कर सके।

**भारत की संभावित रणनीति:**

भारत को रूस और पश्चिम के बीच एक संतुलित कूटनीति बनाए रखनी होगी। भारत को अपने पारंपरिक सहयोगी रूस के साथ संबंधों को बनाए रखते हुए, पश्चिमी देशों के साथ भी अपनी आर्थिक और रणनीतिक साझेदारी को मजबूत करना होगा।

भारत को ऊर्जा स्रोतों में विविधता लानी होगी और घरेलू ऊर्जा उत्पादन को बढ़ावा देना होगा। इसके अलावा, भारत को वैकल्पिक तेल और गैस आपूर्तिकर्ताओं की तलाश करनी चाहिए। रूस पर निर्भरता कम करने के लिए भारत को अन्य देशों से सैन्य उपकरणों की आपूर्ति की व्यवस्था करनी चाहिए। इसके साथ ही, भारत को स्वदेशी रक्षा उत्पादन को भी बढ़ावा देना होगा। भारत को वैश्विक मंच पर शांति और स्थिरता का समर्थक बने रहना चाहिए। रूस-यूक्रेन संघर्ष के समाधान के लिए भारत को एक मध्यस्थ की भूमिका निभाने का प्रयास करना चाहिए।

**निष्कर्ष:**

रूस-यूक्रेन संकट वैश्विक स्थिरता और सुरक्षा के लिए एक गंभीर चुनौती है। इस संघर्ष ने विश्व राजनीति में नई ध्रुवीयता उत्पन्न कर दी है, और यह स्थिति लंबे समय तक बनी रह सकती है। भारत के लिए यह संकट कूटनीतिक, आर्थिक, और सामरिक चुनौतियों से भरा हुआ है। रूस और पश्चिम के बीच संतुलन साधना भारत की विदेश नीति के लिए एक बड़ी परीक्षा है। भारत को इस संकट में अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाना होगा, ताकि वह वैश्विक मंच पर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके।

**संदर्भ ग्रंथ सूची:**


1. वारेन, स्पेंसर ए. एंड गांगुली, सुमित. (2022). "इंडिया-रशिया रिलेशन्स आफ्टर यूक्रेन." एशियन सर्वे, वॉल्यूम-62, इश्यू-5-6, पेज 811-837.
2. मिश्रा, अनुपम. "रूस-यूक्रेन संघर्ष का वैश्विक प्रभाव: ऊर्जा संकट और भारत की भूमिका." भारत अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन समीक्षा, वॉल्यूम 12, अंक 3, 2022.
3. गुप्ता, राघव. "रूस-यूक्रेन युद्ध: ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और भू-राजनीतिक दृष्टिकोण." एशियाई राजनीति और अंतर्राष्ट्रीय संबंध, 2022.
4. कुमार, नीरज. "भारत की तटस्थता नीति और रूस-यूक्रेन संघर्ष में उसकी कूटनीति." भारत विदेश नीति विश्लेषण, वॉल्यूम 8, अंक 2, 2022.
5. सिंह, आकाशदीप. "रूस-यूक्रेन संघर्ष के दौरान वैश्विक ऊर्जा बाजार पर प्रभाव." विश्व राजनीति और अर्थव्यवस्था जर्नल, 2022.
6. भारतीय विदेश मंत्रालय. "रूस-यूक्रेन संघर्ष पर भारत का आधिकारिक बयान." भारत सरकार विदेश मंत्रालय की वेबसाइट, 2022. (https://www.mea.gov.in)
7. शर्मा, आलोक. "रूस-यूक्रेन संकट और भारत की रक्षा तैयारियां: चुनौतियाँ और अवसर." रक्षा और रणनीति जर्नल, 2022.
8. यूनाइटेड नेशंस. "रूस-यूक्रेन संघर्ष और भारत का संयुक्त राष्ट्र में रुख." यूएन रिपोर्ट्स ऑन ग्लोबल क्राइसिसेज, 2022.

9. सक्सेना, प्रताप. "रूस-यूक्रेन संघर्ष के दौरान भारत-रूस संबंधों की प्रासंगिकता." अंतर्राष्ट्रीय राजनीति एवं कूटनीति अध्ययन जर्नल, 2023.
10. राजू, विवेक. "वैश्विक खाद्य सुरक्षा पर रूस-यूक्रेन युद्ध का प्रभाव और भारत के लिए सबक." कृषि और व्यापार नीति जर्नल, 2023.
11. झा, प्रदीप. "रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद भारत के लिए ऊर्जा सुरक्षा के नए आयाम." उर्जा नीति और रणनीति विश्लेषण पत्रिका, 2022.